E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

30

उर्दू का महान कवि: डॉ. इकबाल

डॉ. शेख आफाक अंजुम
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, जलगांव
Emil- drafaqanjum@gmail.com

उर्दू शायरी को प्रगत बनाने में जिन जिन कवियों ने अपना योगदान दिया है, उनके नामों की एक लंबी मालिका है। इन नामों में कुछ ऐसे महान कवि भी हैं जो साहित्य के आसमान पर इस शान के साथ जगमगाए की सदियां बीत जाने के बाद भी उनकी शायरी का चिराग लोगों के दिलों में रोशन है। साहित्य के आकाश में जगमगाते हुए ऐसे ही एक सितारे का नाम डॉक्टर इकबाल है, जिसका प्रकाश एक सदी बीत जाने के बाद भी मांद नहीं पड़ा, जिसकी शायरी को हर दौर में पसंद किया गया जो हर दौर में नई लगती है।

डॉ. इकबाल का जन्म कश्मीरी पंडितों के एक पुरातन व विशेष महत्व रखने वाले सुप्रो खानदान में 9 नवंबर 1877 को सियालकोट नगर में हुआ। इकबाल के पिता का नाम शेख नूर मोहम्मद था। नूर मोहम्मद सियालकोट शहर के जाने-माने और सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। इकबाल की प्राथमिक शिक्षा इस्लामी मदरसों में हुई। आगे चलकर गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी.ए. और एम.ए. किया। बाद में कैंब्रिज विद्यापीठ से 'तत्व ज्ञाता' (फलसफा) का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। विलायत से वापसी पर गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में 'तत्व ज्ञाता-व्याख्याता' की हैसियत से जिम्मेदारी निभाई। 1934 मैं ब्रिटिश सत्ता ने उन्हें 'सर' का खिताब प्रदान किया।

इकबाल की शायरी की शुरुआत सियालकोट शहर में विद्यार्थी युग से हुई। शुरू के जमाने में लाहौर के एक कवि सम्मेलन में इकबाल ने एक ग़ज़ल पढ़ी जिसका एक शेर बहुत पसंद किया गया और लोगों में काफी प्रसिद्ध हुआ।

मोती समझ के शाने करीमी ने चुन लिए
कतरे जो थे मेरे अरके इंफआल के [1]

इकबाल दाग देहलवी के शिष्य थे, मगर उन्होंने गालिब और हाली का प्रभाव ज्यादा लिया था। इकबाल की शायरी जो उन्हें दूसरों के मुकाबले में विशेष स्थान प्राप्त कराती है, वह उनकी विशेष शैली है। उनकी शायरी में विचारों की उड़ान, परीक्षण और उद्देश्यता पाई जाती है।

डॉ. सादिक अली इकबाल की इस खास और प्रभावपूर्ण शैली के बारे में लिखते हैं ...

"इकबाल की शायरी एक उद्देश्यपूर्ण शायरी है। इकबाल शायरी सिर्फ दिल बहलाने के लिए नहीं करते, बल्कि शायरी के माध्यम से एक संदेश देना चाहते थे। सृष्टि में मौजूद चराचर और प्रत्येक कण उनका ध्यान आकर्षित कर लेता था, जीवन के सभी पहलुओं पर चिंतन मनन करना इकबाल की नैसर्गिकता थी, इसी कारण उनकी शायरी में वैचारिकता और जिज्ञासा का रंग साफ साफ रूप से दिखाई देता है। जीवन और निसर्ग में मौजूद वह प्रतीक जो औरों के लिए कुछ भी नहीं थे, इकबाल के लिए बहुत कुछ होते दिखाई पड़ते हैं।" [2]

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

इकबाल की नजर में कौम समाज और एकता का बड़ा महत्व था। उन्होंने अपनी शायरी के माध्यम से लोगों को एकता और मिलजुल कर रहने की प्रेरणा दी। उनकी एक लंबी और बेमिसाल कविता 'शमा' का मशहूर शेर इसका द्योतक है।

फर्द कायम रबते मिलत से है तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरिया में और बैरूने दरिया कुछ नहीं [3]

इकबाल को अपने देश और देश के युवकों से बड़ी आशाएं थी। उन्होंने अपनी शायरी के माध्यम से युवक वर्ग में जोश पैदा किया है, जिस का इजहार उनकी शायरी में बखूबी नजर आता है।

उकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
नजर आती है उनको अपनी मंजिल आसमानों में [4]
वह ही जवां है कबीले की आंख का तारा
शबाब जिसका है बेदाग जर्ब है कारी [5]
सबक फिर पढ़ सदाकत का, अदालत का, शुजाअत का
लिया जाएगा तुझसे काम दुनिया की इमामत का [6]

इकबाल अपने धर्म की तरह ही दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। जहां उन्होंने इस्लामी पेशवाओं की प्रशंसा में कविताएं लिखी हैं, वही पर उन्होंने अन्य धर्मों के पेशवाओं की प्रशंसा में भी कविताएं लिखी हैं। भगवान राम की प्रशंसा में लिखी गई इकबाल की कविता जिसका शीर्षक ही 'राम' है। इस कविता की कुछ पंक्तियां देखिए।

है राम के वजूद पर हिंदुस्तान को नाज
अहले नजर समझते हैं उसको इमाम-ए-हिंद
तलवार का धनी था, शुजाअत में मर्द था
पाकिजगी में, जोशे मोहब्बत में फर्द था [7]

इसी प्रकार गुरु नानक की प्रशंसा में इकबाल ने 'नानक' इस शीर्षक से एक कविता लिखी है, जिसका एक शेर देखिए।

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से
हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख्वाब से [8]

इकबाल को अपने देश हिंदुस्तान से असीम प्रेम था। उनका जन्म स्थान सियालकोट था, लेकिन अपने पूर्वजों के वतन कश्मीर से भी उन्हें बेहद प्रेम था। हालांकि अपनी व्यस्तता के कारण वह एक जमाने तक कश्मीर ना जा सके, लेकिन कश्मीर जाने की ख्वाहिश एक मुद्दत से थी।

जगन्नाथ आजाद इकबाल के कश्मीर से बेपनाह लगाव के बारे में लिखते हैं.....

"अगस्त 1921 वह ऐतिहासिक महीना है जब इकबाल आखरी बार कश्मीर तशरीफ लाए और इसकी प्यारी धरती का दर्द भरे दिल से अभ्यास किया। उनके निरीक्षण का हासिल यह था कि, कौटुंबिक स्तर पर इस इलाके केदोजख होने में कोई संदेह नहीं, लेकिन नैसर्गिक वातावरण और

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

नैसर्गिक निशानियां और नजारों के संदर्भ में किसी ने क्या खूब कहा कि ___ जमीन पर अगर जन्नत है, तो यही कश्मीर की जमीन है।"9

इकबाल को अपने वतन की एक एक चीज से दीवानगी की हद तक प्यार था। आसमान को छूते हुए हिमालय पर्वत को बड़े गर्व के साथ अपनी कविता 'हिमाला' में दीवारे सरहद उल्लेख करते हुए कहते हैं।

ऐ हिमाला, ऐ फसीले किश्वरे हिंदुस्तान
चूमता है तेरी परेशानी को झुककर आसमान 10

इकबाल ने अपनी कविताओं के माध्यम से अमन और मोहब्बत, शांति और प्रेम का संदेश भी दिया है।

शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है 11

हिंदुस्तान की भूमि को ना सिर्फ नानक और चिश्ती ने पसंद किया बल्कि मीर-ए-अरब हजरत मोहम्मद (स.) ने भी इस देश की भूमि को पसंद किया है। इस बात को इकबाल ने अपने एक कौमी गीत में बड़े सौंदर्य पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

चिश्ती ने जिस जमीन पर पैगाम-ए-हक सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकान से
मीर-ए-अरब को आई ठंडी हवा जहां से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है 12

जहां तक देश से प्रेम का संबंध है, इकबाल का अपने देश के लिए सबसे बड़ा तोहफा उनका वह कभी ना मिटने वाला हिंदी तराना है जो उन्होंने अपने वतन की मोहब्बत के नशे में चूर होकर लिखा और जिसके एक एक शब्द से देश प्रेम की सुगंध आती है।

सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलसिता हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, वतन है हिंदुस्तान हमारा 13

इकबाल की शायरी का गिने-चुने पन्नों पर जिक्र करना संभव नहीं है। वह एक ऐसा कवि है जिसकी शायरी के विविध शीर्षकों पर और विषयों पर सैकड़ों लोग पीएच.डी. कर चुके हैं और संशोधन का यह सिलसिला आज भी जारी है। प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर एम.ए. तक के अभ्यासक्रम में इकबाल को पढ़ा और पढ़ाया जाता है। इकबाल की शायरी के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, और जब भी कोई नया एडिशन प्रकाशित होता है, हाथों हाथ लिया जाता है। दुनिया के सुप्रसिद्ध ग्रंथालयों में इकबाल का लेखन बड़े सलीके और एहतमाम से सजा हुआ नजर आता है। आज भी उर्दू दुनिया 'योमे इकबाल' या 'इकबाल दिन' बड़ी धूमधाम से मनाती है। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि इकबाल की शायरी कभी ना मिटने वाली शायरी है, जो इतना अवकाश बीत जाने के

©Copyright 2021 AMRJ. All Rights Reserved

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
(IIFS- 2.875) (ISRA JIF- 1.312) January –March 2021 VOL.02. ISSUE IV

पश्चात भी यही नहीं की हर जमाने में मशहूर रही और पसंद की गई बल्कि आज भी इकबाल की शायरी का जादू सिर चढ़कर बोलता है।

संदर्भ :

1. 'तजकारे इकबाल' , मो. अब्दुल्ला कुरेशी , इकबाल अकैडमी पाकिस्तान, सन 1987 पृ.138
2. 'इकबाल के शेरी असालीब' - डॉ. सादिक अली, नाजिश बुक डिपो दिल्ली, सन 1999 पृ. 58
3. 'बांगे दरा' (काव्य संग्रह) , इकबाल, एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़ , सन 1993 पृ.190
4. 'बाले जिब्रील' (काव्य संग्रह) , इकबाल, एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़ , सन 1975 पृ.120
5. 'जरबे कलीम' (काव्य संग्रह), इकबाल, एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़, सन 1975 पृ.171
6. 'बांगे दरा' (काव्य संग्रह) , इकबाल, एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़, सन 1993 पृ.270
7. पूर्ववत , पृ. 177
8. पूर्ववत , पृ. 240
9. 'इकबाल और कश्मीर' ,जगन्नाथ आजाद, अली मो.एंड संस श्रीनगर, सन1993 पृ.108-109
10. 'बांगे दरा' (काव्य संग्रह) – इक़बाल, एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़ , सन 1993 पृ.21
11. पूर्ववत , पृ.88
12. पूर्ववत , पृ.87
13. पूर्ववत , पृ.83

□ □ □